हफ़्तावार रिसाला : 401
Weekly Booklet : 401

Dil Ki Sakhti Ke Chand Asbab (Hindi)

दिल की सख़्ती के चन्द अस्बाब

सफ़हात : 21

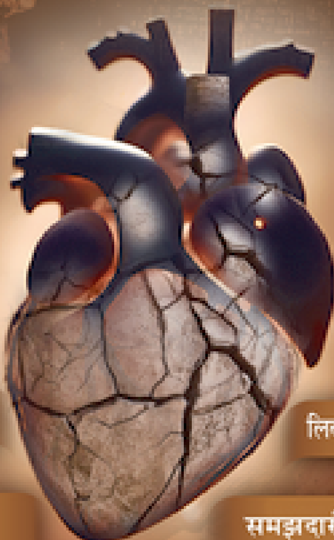

05 दिल की पैदाइश का मक़्सद
लिबास नेकों वाला और.... 14
11 ज़ियादा हंसना
समझदारी की बात 18

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

दिल की सख़्ती के चन्द अस्बाब(1)

दुआए अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 20 सफ़्हात का रिसाला : **"दिल की सख़्ती के चन्द अस्बाब"** पढ़ या सुन ले उसे नर्म दिल व नर्म मिज़ाज बना और उसे मां बाप समेत बे ह़िसाब बख़्श दे । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "तुम अपनी मजलिसों को मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ कर आरस्ता करो क्यूंकि तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना ब रोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा ।" (جامع صغیر، ص280،حدیث:4580)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

आक़ा की चार दुआएं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ख़ुशूअ़ की जगह दिल है जब कि आ'ज़ा इस के ज़ाहिर होने का मक़ाम । **ख़ुशूअ़** का ह़ासिल होना **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** की निहायत अ़ज़ीम ने'मत है । शैत़ान पहले तो बन्दे को **नमाज़** से रोकता है, अगर बन्दा फिर भी **नमाज़** पढ़ने लगता है तो मुख़्तलिफ़ दुन्यवी चीज़ें याद दिला कर नमाज़ की रूह़ या'नी **ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़** ख़त्म करने की कोशिश करता है । बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ के साथ नमाज़ें अदा किया करते थे, हमें भी ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ ह़ासिल

(1)... येह मज़्मून अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की किताब "फ़ैज़ाने नमाज़" सफ़्ह़ा 339 ता 355 से लिया गया है ।

करने के लिये ख़ूब कोशिश करनी और इसे पाने के लिये गिड़गिड़ा कर दुआएं मांगनी चाहिएं। हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم यूं दुआ मांगा करते :

﴾1﴿ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ قَلْبٍ لَّا يَخْشَعُ۔ (ترمذی، 5/293، حدیث:3493 مختصراً)

ऐ **अल्लाह** ! मैं उस दिल से तेरी पनाह लेता हूं जो ख़ुशूअ़ इख़्तियार न करे।

﴾2﴿ رَبِّ اجْعَلْنِیْ لَكَ شَكَّارًا، لَكَ ذَكَّارًا، لَكَ رَهَّابًا، لَكَ مِطْوَاعًا، لَكَ مُخْبِتًا، اِلَيْكَ اَوَّاهًا مُّنِيْبًا۔ (ترمذی، 5/323، حدیث:3562 مختصراً)

ऐ मेरे रब ! मुझे तेरा बहुत शुक्र गुज़ार, तेरा ब कसरत ज़िक्र करने वाला, तुझ से बहुत डरने वाला, तेरा निहायत फ़रमां बरदार, तेरे लिये ख़ुशूअ़ इख़्तियार करने वाला, तेरी बारगाह में बहुत गिर्या व ज़ारी करने वाला और रुजूअ़ लाने वाला बना।

﴾3﴿ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ عِلْمٍ لَّا يَنْفَعُ، وَمِنْ قَلْبٍ لَّا يَخْشَعُ، وَمِنْ نَفْسٍ لَّا تَشْبَعُ، وَمِنْ دَعْوَةٍ لَّا يُسْتَجَابُ لَهَا۔ (مسلم، ص1118، حدیث:6906)

ऐ **अल्लाह** ! मैं तेरी पनाह लेता हूं उस इ़ल्म से जो नफ़्अ़ न दे, उस दिल से जो ख़ुशूअ़ इख़्तियार न करे, उस नफ़्स से जो सैर न हो, उस दुआ से जो क़बूल न हो।

﴾4﴿ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ صَلَاةٍ لَّا تَنْفَعُ۔ (ابوداؤد، 2/131، حدیث:1549)

ऐ **अल्लाह** ! मैं तेरी पनाह लेता हूं उस नमाज़ से जो नफ़्अ़ न दे।

इ़ल्मे नाफ़ेअ़ से दिल में ख़ुशूअ़ पैदा होता है

अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه **दुआए मुस्त़फ़ा** नम्बर 3 के तह़त फ़रमाते हैं : बारगाहे इलाही में "उस इ़ल्म से जो नफ़्अ़ न दे" और "उस दिल से जो ख़ुशूअ़ इख़्तियार न करे" एक साथ अ़र्ज़ करने में येह

इशारा है कि **इल्मे नाफ़ेअ़** (या'नी नफ़्अ़ देने वाले इ़ल्म) **से दिल में ख़ुशूअ़ पैदा होता है ।** (فیض القدیر، 2/194)

"इल्मे नाफ़ेअ़" किसे कहते हैं ?

इ़ल्मे नाफ़ेअ़ (या'नी नफ़्अ़ देने वाला इ़ल्म) वोह होता है जो दिल में असर कर जाए और उस में **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** की मा'रिफ़त, अ़ज़्मत, ख़ौफ़, ता'ज़ीम और महब्बत डाल दे और जब येह चीज़ें दिल में ठहर जाती हैं तो दिल में **ख़ुशूअ़** पैदा होता है और दिल की पैरवी में तमाम आ'ज़ा भी ख़ुशूअ़ इख़्तियार करते हैं । (مجموع رسائل ابن رجب، 1/16)

शैत़ान क़रीब नहीं आता

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जिस शख़्स के दिल में **ख़ुशूअ़** होता है शैत़ान उस के क़रीब नहीं आता ।" (بصائر ذوی التمییز، 2/542)

गुनाह ख़ुशूअ़ की राह में बहुत बड़ी रुकावट हैं

अगर आप ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ से नमाज़ें पढ़ना चाहते हैं तो सब से पहले गुनाहों से परहेज़ कीजिये, गुनाह **ख़ुशूअ़** की राह में बहुत बड़ी रुकावट हैं, गुनाह पर क़ाइम रहते हुए **ख़ुशूअ़** ह़ासिल नहीं हो सकता ।

दिलों को नर्म करने वाले काम

अगर दिल में नरमी व ख़ुशूअ़ लाना चाहते हैं तो नेकियों की कसरत कीजिये और एक अ़ज़ीमुश्शान नेकी तिलावते क़ुरआन भी है । तिलावत के सबब दिल नर्म होता है, नीज़ लोगों के साथ भलाई करना भी दिल की नर्मी का बाइ़स है । एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में दिल की **सख़्ती** की शिकायत की तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारा दिल नर्म हो जाए तो मिस्कीनों को खाना खिलाओ और यतीम के सर पर हाथ फेरो।" (شعب الایمان،7/472،حدیث:11034)

यतीम के सर पर हाथ फेरने की फ़ज़ीलत

मक्तबतुल मदीना के रिसाले "एह़तिरामे मुस्लिम" सफ़ह़ा 12 ता 13 पर है : जिस बच्चे या बच्ची का बाप फ़ौत हो जाए उस को **यतीम** कहते हैं। जब बच्चा बालिग़ या बच्ची बालिग़ा हो गई तो अब यतीम के अह़काम ख़त्म हुए। यतीमों के साथ ह़ुस्ने सुलूक का भी बड़ा सवाब है। चुनान्चे रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : "जो शख़्स **यतीम** के सर पर मह़्ज़ **अल्लाह** पाक के लिये हाथ फेरे तो जितने बालों पर उस का हाथ गुज़रा हर बाल के मुक़ाबिल में उस के लिये नेकियां हैं और जो शख़्स **यतीम** लड़की या **यतीम** लड़के पर एह़सान करे मैं और वोह जन्नत में (दो उंग्लियों को मिला कर फ़रमाया) इस त़रह़ होंगे।" (مسند امام احمد،8/272،حدیث:22215)

उम्मत के ग़म ख़्वार आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "लड़का यतीम हो तो उस के सर पर हाथ फेरने में आगे की त़रफ़ ले आए और बच्चे का बाप हो तो हाथ फेरने में गरदन की त़रफ़ ले जाए।" (معجم اوسط،1/351،حدیث:1279)

दिल की सख़्ती कैसे दूर हो ? (वाक़िआ़)

उम्मुल मुअमिनीन तमाम मुसल्मानों की प्यारी प्यारी अम्मीजान, ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا से एक ख़ातून ने क़सावते क़ल्बी (या'नी दिल की सख़्ती) की शिकायत की तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : "**मौत को कसरत से याद किया कर तेरा दिल नर्म हो जाएगा।**" जब उस औ़रत ने ऐसा किया तो उस का दिल नर्म हो गया। पस उस ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا का शुक्रिय्या अदा किया। (الرّوض الفائق،ص23)

दिल की पैदाइश का मक़्सद

इमाम शरफ़ुद्दीन हुसैन बिन मुहम्मद तीबी رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **दिल को** पैदा करने का मक़्सद सिर्फ़ येह है कि वोह **अल्लाह** पाक के लिये **ख़ुशूअ** करे ताकि इस के सबब सीना खुल जाए और **दिल** नूर डाले जाने के क़ाबिल हो जाए, जब दिल में ख़ुशूअ नहीं होगा तो वोह **सख़्त** कहलाएगा और सख़्त दिली से पनाह मांगना ज़रूरी है, **अल्लाह** करीम (पारह 23 **सूरतुज़्ज़ुमर** आयत 22 में) इर्शाद फ़रमाता है :

فَوَيْلٌ لِّلْقٰسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ (پ23، الزّمر:22)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो ख़राबी है उन की जिन के दिल यादे ख़ुदा की तरफ़ से सख़्त हो गए हैं। (شرح الطیبی، 5/210)

सख़्त दिल की पहचान

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : आजिज़ दिल ज़रख़ेज़ ज़मीन की तरह है जिस में पैदावार ख़ूब होती हो और सख़्त दिल उस पथरीले अ़लाक़े की तरह है जिस में फैलाया हुवा बीज बेकार जाता है। (मिरआतुल मनाजीह, 4/60) (एक और मक़ाम पर फ़रमाते हैं) जिस दिल में **अल्लाह** (पाक) के ज़िक्र से चैन, अ़ज़ाब के ज़िक्र से ख़ौफ़, जन्नत के ज़िक्र से शौक़, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़िक्र से विज्दान (या'नी क़ल्बी लज़्ज़त) न पैदा हो वोह **सख़्त** है, **अल्लाह** (पाक) इस से बचाए।

(मिरआतुल मनाजीह, 4/59)

आप का नाम सुनते ही सरकार काश   दिल मचलने लगे जान हो बे क़रार

(वसाइले बख़्शिश, स. 224)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

अल्लाह के नज़्दीक सूरज से ज़ियादा रौशन चेहरा किस का होगा ?

एक ह़दीसे क़ुदसी में **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है : मैं हर नमाज़ी की **नमाज़** क़बूल नहीं फ़रमाता बल्कि मैं उस की **नमाज़** क़बूल करता हूं जो मेरी अ़ज़मत की ख़ाति़र तवाज़ोअ़ (या'नी आ़जिज़ी) इख़्तियार करे, मेरी ह़राम कर्दा चीज़ों से अपनी ख़्वाहिशात को रोके रहे, मेरी ना फ़रमानी पर इसरार न करे, भूके को खाना खिलाए, बे लिबास को लिबास पहनाए, मुसीबत ज़दा पर रह़्म करे, मुसाफ़िर को ठिकाना दे और येह सब कुछ मेरे लिये करे। मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! **उस के चेहरे का नूर मेरे नज़्दीक सूरज के नूर से ज़ियादा रौशन होगा,** इ़लावा अज़ीं मैं उस की जहालत को ह़िल्म (या'नी बुर्दबारी, नरमी) और तारीकी (या'नी अंधेरे) को रौशनी बना दूंगा, वोह मुझे पुकारेगा मैं उसे लब्बैक कहूंगा, मुझ से सुवाल करेगा मैं उसे अ़त़ा करूंगा, मुझ पर क़सम उठाएगा मैं उस की क़सम पूरी करूंगा नीज़ उसे अपना क़ुर्ब अ़त़ा कर के उस की निगहबानी करूंगा और अपने फ़िरिश्तों के ज़रीए़ उस की ह़िफ़ाज़त करवाऊंगा। (کنز العمال،4/214،حدیث:20100)

गुनाहों से दिल काला हो जाता है

जिस का दिल सख़्त हो जाता है उस से **ख़ुशूअ़** रुख़्सत हो जाता है, दिल सख़्त होने के कई अस्बाब हैं, इन में से एक सबब **गुनाह करना** भी है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे दो जहान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़ली निशान है : जब बन्दा कोई गुनाह करता है तो उस के दिल में एक सियाह नुक़्ता़ (Black dot) पैदा होता है, जब उस गुनाह से बाज़ आ जाता है और तौबा व इस्तिग़फ़ार कर लेता है तो उस का

दिल साफ़ हो जाता है और अगर फिर गुनाह करता है तो वोह नुक़्ता बढ़ता है यहां तक कि पूरा दिल सियाह हो जाता है। और येही वोह ज़ंग है जिस का ज़िक्र **अल्लाह** पाक ने इस त़रह़ फ़रमाया है :

كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۱۴﴾ (پ30، المطففین:14)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : कोई नहीं बल्कि उन के दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है उन की कमाइयों ने।

(ترمذی، 5/220، حدیث:3345)

जी चाहता है फूट के रोऊं तेरे ग़म में   सरकार ! मगर दिल की क़सावत नहीं जाती

(वसाइले बख़्शिश, स. 382)

ज़ालिम से मिलना दिल काला करता है

बिग़ैर मक़्सद के हुक्काम से मिलना मुनासिब नहीं होता इस के कई मन्फ़ी असरात (Bad effects) हो सकते हैं : बादशाहे वक़्त ने इमामुल अस्फ़िया ह़ज़रते दावूद त़ाई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से मुलाक़ात करनी चाही तो आप ने इन्कार फ़रमा दिया और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के ह़वाले से येह रिवायत बयान की, कि رُؤْيَةُ وَجْهِ الظَّالِمِ تُسَوِّدُ الْقُلُوْب या'नी ज़ालिम का चेहरा देखना दिल को काला करता है।

(सब्ए़ सनाबिल, स. 95 मुलख़्ख़सन)

गुनाह कुफ़्र के क़ासिद हैं

बुज़ुर्गों का फ़रमान है : "**गुनाह कुफ़्र के क़ासिद** (या'नी अस्बाब) हैं" या'नी इस ए'तिबार से कि गुनाह **दिल में सियाही पैदा** कर के उसे इस त़रह़ ढांप लेते हैं कि फिर वोह कभी किसी भलाई को क़बूल नहीं करता, उस वक़्त दिल **सख़्त** हो जाता है और उस से हर रह़मतो मेह्‌रबानी और

ख़ौफ़ निकल जाता है, फिर वोह शख़्स जो चाहता है कर गुज़रता है और जो बात उसे पसन्द होती है उस पर अ़मल करता है, नीज़ **अल्लाह** पाक के मुक़ाबले में शैत़ान को अपना दोस्त बना लेता है तो वोह शैत़ान उसे गुमराह करता, वर्ग़लाता, झूटी उम्मीदें दिलाता और जिस क़दर मुम्किन हो उस से **कुफ़्र** से कम किसी बात पर राज़ी नहीं होता।

(जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल, 1/63)

दिन रात मुसलसल है गुनाहों का तसल्सुल कुछ तुम ही करो ना येह नुहूसत नहीं जाती

(वसाइले बख़्शिश, स. 382)

दिल पर मोह्र कर दी गई तो नेकी की तौफ़ीक़ न मिलेगी

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : "**अल्लाह** पाक और बन्दे के दरमियान गुनाहों की एक त़ै शुदा ह़द है जब बन्दा उस ह़द तक पहुंच जाता है तो **अल्लाह** पाक उस के दिल पर मोह्र (Seal) कर देता है इस के बा'द उसे नेकी की तौफ़ीक़ नहीं दी जाती।"

(احیاء العلوم، 4/65, एह़याउल उ़लूम (उर्दू), 4/157)

या अल्लाह पाक ! रह़्म की दरख़्वास्त है, मेरे दिल से गुनाहों की सियाही को मिटा कर इस में नेकियों का नूर भर दे, मौला ! वरना कहीं का न रहूंगा।

गुनाहों की आ़दत बढ़ी जा रही है करम या इलाही करम या इलाही
गुनाहों की तारीकियां छा गई हैं करम या इलाही करम या इलाही
तू अ़त्त़ार को बे सबब बख़्श मौला करम कर करम कर करम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 111)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

दिल की सख़्ती का एक सबब फ़ुज़ूल गोई है

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने ह़वारियों को नसीह़त करते हुए इर्शाद फ़रमाया : "**ऐ लोगो !** तुम फ़ुज़ूल बोलने से बचते रहो, कभी भी ज़िक्रुल्लाह के इलावा अपनी ज़बान से कोई लफ़्ज़ न निकालो, वरना तुम्हारे दिल **सख़्त** हो जाएंगे, ह़ालां कि दिल नर्म होते हैं (लेकिन फ़ुज़ूल गोई इन्हें सख़्त कर देती है) और **सख़्त** दिल **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** की रह़मत से मह़रूम होता है (या'नी अगर तुम **अल्लाह** पाक की रह़मत के उम्मीदवार हो तो अपने दिलों को सख़्ती से बचाओ) ।" (عیون الحکایات، ص119)

या रब ! न ज़रूरत के सिवा कुछ कभी बोलूं

अल्लाह ज़ुबां का हो अ़त़ा क़ुफ़्ले मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 93)

लज़ीज़ चीज़ें खाते रहना दिल की सख़्ती का बाइ़स है

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "राहे आख़िरत पर चलने वाले बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की मुबारक आ़दत थी कि वोह सालन हमेशा नहीं बल्कि कभी कभार ही खाते थे, और नफ़्स की ख़्वाहिशात से बचते थे, क्यूं कि **इन्सान अगर ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ लज़ीज़ चीज़ें खाता रहे तो इस से उस के नफ़्स में अकड़** (या'नी सरकशी, मग़रूरी) **और दिल में सख़्ती पैदा होती है,** नीज़ वोह दुन्या की लज़ीज़ चीज़ों से इस क़दर मानूस (या'नी उन का इस क़दर आ़दी) हो जाता है कि दुन्यवी लज़्ज़तों की मह़ब्बत उस के दिल में घर कर जाती है और वोह रब्बे काएनात جَلَّ جَلَالُهٗ की मुलाक़ात और उस की बारगाहे आ़ली में ह़ाज़िरी को भूल जाता है, उस के ह़क़ में दुन्या

जन्नत और मौत **क़ैदख़ाना** बन जाती है। अलबत्ता वोह अपने नफ़्स पर अगर सख़्ती डाले और उस को लज़्ज़तों से महरूम रखे तो दुन्या उस के लिये क़ैदख़ाना बन कर तंग हो जाती है और उस का नफ़्स उस क़ैदख़ाने और तंगी से आज़ादी चाहता है और **मौत** ही उस की आज़ादी है। हज़रते सय्यिदुना **यह्या** बिन मुआज़ राज़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के फ़रमान में इसी बात की तरफ़ इशारा है चुनान्चे आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **"ऐ सिद्दीक़ीन के गिरोह !** जन्नत का वलीमा खाने के लिये अपने आप को भूका रखो क्यूं कि नफ़्स को जिस क़दर भूका रखा जाए उसी क़दर खाने की ख़्वाहिश बढ़ती है।" (احیاء العلوم، 3/113)

कोहे लुबनान के औलिया की नसीहत

पेट भर कर खाने का एक नुक़्सान येह होता है कि आदमी इबादत की लज़्ज़त और मिठास से महरूम हो जाता है, चुनान्चे अमीरुल मुअमिनीन मुसल्मानों के पहले ख़लीफ़ा हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : मैं जब से मुसल्मान हुवा हूं कभी पेट भर कर नहीं खाया ताकि इबादत की हलावत (या'नी मिठास) नसीब हो। हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं **कोहे लुबनान** में कई औलियाए किराम की सोहबत में रहा, उन में से हर एक ने मुझ से येही कहा : जब लोगों में जाओ तो उन्हें चार बातों की नसीहत करना, उन में एक नसीहत येह थी कि जो ज़ियादा खाएगा उसे इबादत की लज़्ज़त नसीब नहीं होगी। (منہاج العابدین، ص84تا98)

शौक़ खाने का बढ़ चला या रब नफ़्स का दाव चल गया या रब !
ख़ूब खाने की ख़ू मिटा या रब नेक बन्दा मुझे बना या रब !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

दिल की सख़्ती का एक सबब ज़ियादा हंसना

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! हंसना अगर्चे जाइज़ है लेकिन "ज़ियादा हंसना" ग़फ़्लत में डालने वाला, ग़ैर मुनासिब और दिल को मुर्दा कर देने वाला काम है, ग़ैर ज़रूरी हंसी से बचने के सबब اِنْ شَآءَاللہ रूहा़निय्यत में तरक़्क़ी हा़सिल होगी। लिहाज़ा इस सिल्सिले में कुछ इर्शादात पेश किये जाते हैं कि कहीं यादे आख़िरत के मुतअ़ल्लिक़ हमें सन्जीदगी मिले ! रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : "ज़ियादा मत हंसो ! क्यूं कि ज़ियादा हंसना दिल को मुर्दा कर देता है।" (ابن ماجہ،4/465،حدیث:4193)

हंसना ग़फ़्लत की अ़लामत है

ज़ियादा हंसना आख़िरत से ग़फ़्लत की अ़लामत (या'नी निशानी) है। सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : لَوْ تَعْلَمُوْنَ مَا اَعْلَمُ لَضَحِكْتُمْ قَلِيْلًا وَّلَبَكَيْتُمْ كَثِيْرًا۔ या'नी अगर तुम वोह जान लेते जो मैं जानता हूं तो कम हंसते और ज़ियादा रोते। (بخاری،3/218،حدیث:4621)

क्या सहा़बा हंसते थे ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से पूछा गया कि क्या **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सहा़बा हंसते थे ? फ़रमाया : हां और उन के दिलों में ईमान पहाड़ से मज़बूत़ था। (شرح السنہ،6/375،حدیث:3244)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : शायद साइल (या'नी पूछने वाले) ने वोह ह़दीस सुनी होगी, "ज़ियादा हंसना दिल मुर्दा करता है" तो उस ने सोचा होगा कि ह़ज़राते सहा़बा (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) कभी न हंसते होंगे (क्यूं कि) वोह ह़ज़रात (तो) ज़िन्दा दिल थे फिर उन्हें हंसी से क्या तअ़ल्लुक़ ! (सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا

के "हां" में) जवाब (देने) का मक़्सद येह है कि **हंसना** ह़राम नहीं ह़लाल है, वोह ह़ज़रात (या'नी सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان) वोह हंसी न हंसते थे जो दिल मुर्दा कर दे या'नी हर वक़्त हंसते रहना बल्कि वोह (साहि़बान वोह) हंसी हंसते थे जो दिल को शिगुफ़्ता (या'नी तरो ताज़ा) रखे और सामने वाले को भी शिगुफ़्ता (या'नी तरो ताज़ा) बना दे। (मिरआत, 6/404)

दिल की मौत का सबब

अमीरुल मुअमिनीन मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : जो ज़ियादा हंसता है उस का रो'ब कम हो जाता है और जो मिज़ाह़ (या'नी मज़ाक़ मस्ख़री) करता है लोगों की नज़रों से गिर जाता है, जो किसी काम को कसरत से (या'नी ज़ियादा) करता है वोह उसी के ह़वाले से पहचाना जाता है, जो ज़ियादा बोलता है वोह ज़ियादा ग़लति़यां करता है और जिस की ग़लति़यां ज़ियादा हो जाएं उस की ह़या कम हो जाती है और जिस की ह़या कम हो जाए उस की परहेज़ गारी कम हो जाती है और जिस की परहेज़ गारी कम हो जाए उस का दिल मर जाता है। (एह़याउल उ़लूम (मुतर्जम), 3/389)

क्या येह अल्लाह से डरने वालों का अन्दाज़ है ? (वाक़िआ)

ह़ज़रते सय्यिदुना वुहैब बिन वर्द رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ने ईदुल फ़ित्र के दिन कुछ लोगों को हंसते हुए देखा तो इर्शाद फ़रमाया : अगर इन लोगों की मग्फ़िरत हो गई है तो क्या येह शुक्र करने वालों का काम है और अगर इन की बख़्शिश नहीं हुई तो क्या येह ख़ाइफ़ीन (या'नी डरने वालों) का अन्दाज़ है ? (एह़याउल उ़लूम (मुतर्जम), जि. 3, स. 390) येह रिवायत ग़फ़्लत वाली हंसी के मुतअ़ल्लिक़ होगी वरना ईद पर ख़ुशी का इज़्हार करना चाहिये।

अल्लाह से डरने वाले कौन हैं ?

सहा़बी इब्ने सहा़बी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से पूछा गया कि ख़ाइफ़ीन (या'नी **अल्लाह** पाक से डरने वाले) कौन हैं ? फ़रमाया : उन के दिल ख़ौफ़े ख़ुदा से ज़ख़्मी हैं, उन की आंखें रोती हैं, वोह कहते हैं कि हम कैसे ख़ुशी करें जब कि मौत हमारे पीछे है और क़ब्र हमारे सामने है और क़ियामत हमारे वा'दे की जगह है, जहन्नम पर से गुज़रना है और **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** के सामने खड़ा होना है। (احیاء العلوم،4/227)

रोता हुवा जहन्नम में दाख़िल होगा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं : "जो हंसता हुवा गुनाह करता है वोह रोता हुवा जहन्नम में दाख़िल होगा।" (एह़याउल उ़लूम (उर्दू), 3/391) ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन क़ैस رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہِ फ़रमाते हैं : "जो शख़्स दुन्या में बहुत हंसता है वोह क़ियामत में बहुत रोएगा।" (تنبیہ المغترین، ص42)

वोह फिर कभी हंसता न देखा गया (वाक़िआ़)

अ़ज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہِ ने एक शख़्स को देखा कि वोह हंस रहा है आप ने फ़रमाया : يَا فَتٰی هَلْ مَرَرْتَ بِالصِّرَاطِ؟ या'नी : ऐ जवान ! क्या तू पुल सिरात़ से गुज़र चुका है ? उस ने कहा : नहीं। फिर फ़रमाया : هَلْ تَدْرِیْ اِلَی الْجَنَّةِ تَصِیْرُ اَمْ اِلَی النَّارِ؟ या'नी क्या तू जानता है कि तू जन्नत में जाएगा या दोज़ख़ में ? उस ने कहा : नहीं ! फ़रमाया : فَمَا هٰذَا الضِّحْكُ या'नी फिर येह हंसना कैसा है ? (احیاء العلوم،4/227) या'नी जब ऐसी मुश्किलात तेरे सामने हैं और तुझे अपनी नजात का भी इ़ल्म नहीं तो फिर किस ख़ुशी पर हंस रहा है ? इस के बा'द वोह शख़्स किसी से हंसता हुवा नहीं देखा गया। (अख़्लाक़ुस्सालिह़ीन, स. 49)

जन्नत में कोई रोए तो तअ़ज्जुब की बात है

हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन वासेअ़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब तुम जन्नत में किसी को रोता हुवा देखोगे तो क्या तुम्हें उस के रोने से तअ़ज्जुब नहीं होगा ? अ़र्ज़ की गई : ज़रूर होगा । इर्शाद फ़रमाया : तो जो दुन्या में **हंसता** है लेकिन उसे येह मा'लूम न हो कि उस का ठिकाना क्या है (या'नी जन्नत पाना है या जहन्नम में जाना है) तो उस (हंसने वाले) शख़्स पर इस से भी ज़ियादा तअ़ज्जुब है । (एह़याउल उ़लूम (उर्दू), 3/391)

मौत का यक़ीन रखने वाला कैसे हंसे ?

ह़दीसे क़ुदसी में आया है (**अल्लाह** पाक फ़रमाता है) : عَجَبًا لِمَنْ اَيْقَنَ بِالْمَوْتِ كَيْفَ يَفْرَحُ- या'नी तअ़ज्जुब है उस शख़्स पर जो मौत का यक़ीन रखता है, फिर कैसे हंसता है ! (شعب الایمان،1/223،حدیث:212)

40 साल तक न हंसे

हज़रते सय्यिदुना सई़द बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **चालीस साल तक न हंसे** यहां तक कि आप की वफ़ात हो गई । इसी त़रह़ ह़ज़रते ग़ज़्वान रक़ाशी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नहीं हंसते थे । (تنبیہ المغترین، ص42)

50 साल तक हंसते न देखा

हज़रते सय्यिदुना औ़न बिन अबू ज़ैद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते अ़त़ा सुलमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पास **पचास साल** रहा मैं ने उन को कभी हंसते हुए नहीं देखा । (تنبیہ المغترین، ص42)

लिबास नेकों वाला और......

ह़ज़रते मुआ़ज़ा अ़दविय्या رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا एक दिन ऐसे नौ जवानों पर गुज़रीं जो कि हंस रहे थे और उन का लिबास सूफ़ (ऊन) का था या'नी लिबास

सूफ़ियाना था तो आप ने फ़रमाया : سُبْحٰنَ اللهِ،لِبَاسُ الصَّالِحِيْنَ وَضِحْكُ الْغَافِلِيْنَ । سُبْحٰنَ الله ! लिबास तो नेक लोगों का है और हंसना ग़ाफ़िलों का।

(تنبیہ المغترین، ص42)

नमाज़ में हंसने के अह़काम

《1》 रुकूअ़ व सुजूद वाली नमाज़ में बालिग़ ने क़ह्क़हा लगा दिया या'नी इतनी आवाज़ से हंसा कि आस पास वालों ने सुना तो वुज़ू भी गया और नमाज़ भी गई, अगर इतनी आवाज़ से हंसा कि सिर्फ़ ख़ुद सुना तो नमाज़ गई वुज़ू बाक़ी है, मुस्कुराने से न नमाज़ जाएगी न वुज़ू। मुस्कुराने में आवाज़ बिल्कुल नहीं होती सिर्फ़ दांत ज़ाहिर होते हैं 《2》 बालिग़ ने नमाज़े जनाज़ा में क़ह्क़हा लगाया तो नमाज़ टूट गई वुज़ू बाक़ी है। 《3》 नमाज़ के इलावा क़ह्क़हा लगाने से वुज़ू नहीं जाता मगर दोबारा कर लेना **मुस्तह़ब** है। (مراقی الفلاح،ص84تا91) **हमारे प्यारे प्यारे आक़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी भी क़ह्क़हा नहीं लगाया लिहाज़ा हमें भी कोशिश करनी चाहिये कि हम ज़ोर ज़ोर से न हंसें।

या रब्बे मुस्त़फ़ा ! हमारे दिलों की सख़्ती दूर कर के इन्हें अपनी याद से मा'मूर फ़रमा, फ़ुज़ूल गोई, बे जा हंसी और नफ़्सानी ख़्वाहिशात की इत्तिबाअ़ से हम को बचा। हर त़रह़ के गुनाह से हमारी ह़िफ़ाज़त फ़रमा और हमें हर दम ज़िक्रो दुरूद में मश्ग़ूल रहने की सआ़दत इनायत फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

हो गया क़ल्ब हाए सियाह लुत़्फ़ नूरे ख़ुदा कीजिये
क़ल्ब पथ्थर से भी सख़्त है इस को नरमी अ़त़ा कीजिये
जगमगा दीजे क़ल्बे सियाह लुत़्फ़ बदरुद्दुजा कीजिये

(वसाइले बख़्शिश, स. 505)

म्यूज़िक सेन्टर बन्द कर दिया

ऐ आख़िरत की बेहतरी का दर्द रखने वालो ! बे जा हंसी की आ़दत मिटाने, दिल आज़ारियों से ख़ुद को बचाने और सन्जीदगी पाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में रहिये। आप की तरग़ीब के लिये एक "**मदनी बहार**" पेशे ख़िदमत है : एक इस्लामी भाई उस वक़्त आठवीं क्लास में पढ़ते थे जब बुरे दोस्तों की सोह़बत ने उन पर अपना रंग चढ़ाना शुरूअ़ किया। मैट्रिक के बा'द कॉलेज में दाख़िला हुवा तो गोया उन्हें हर बुरा काम करने की खुली छूट मिल गई ! शैत़ान ने हाथ पकड़ कर उन्हें तबाही के गढ़े में धकेल दिया। अब शराब नोशी, मारधाड़, जूआ और त़रह़ त़रह़ के बुरे काम किया करते थे। बा'ज़ अवक़ात तो सारी सारी रात जूआ खेलते और नशा करते हुए गुज़र जाती यहां तक कि फ़ज्र की अज़ानें सुनाई देतीं लेकिन अफ़्सोस ! वोह अपने दोस्तों के साथ मौज मस्तियों में लगे होते। अगर कभी उन की मां उन्हें समझाती भी तो उस से ज़बान दराज़ी किया करते बल्कि مَعَاذَاللّٰہ गालियां तक बक देते। उन्हों ने अपने कमरे में चारों त़रफ़ फ़िल्मी अदाकाराओं की तस्वीरें लगा रखी थीं और उन तस्वीरों के पीछे एक जगह "ख़ुफ़्या ख़ाना" बना रखा था जहां हर वक़्त शराब की बोतल मौजूद होती। इन्ही सियाह कारियों में मसरूफ़ रहते हुए 1998 ई. का साल आ गया। उन्हों ने अपना "म्यूज़िक सेन्टर" खोल लिया, एक दिन वोह दुकान पर बैठे हुए थे कि इमामे वाले एक इस्लामी भाई ने उन्हें मक्तबतुल मदीना से जारी होने वाले सुन्नतों भरे बयान की एक कैसिट दी और चलाने की दरख़्वास्त की, उन्हों ने जूंही कैसिट चलाई तो किसी मौलाना की आवाज़ सुनाई दी उन्हों ने घबरा कर बन्द कर दी और इस्लामी

भाई को कैसिट वापस कर के कहने लगे : भाई ! मैं इन चीज़ों से इलर्जिक हूं, मैं येह कैसिट नहीं चला सकता। उस इस्लामी भाई ने गुस्सा करने के बजाए रोनी सूरत बना कर कहा : अगर यहां नहीं चला सकते तो बराहे करम ! येह कैसिट घर ले जाएं और सुन ज़रूर लीजियेगा। उन्हों ने जान छुड़ाने के लिये उन से कैसिट ले कर जैकेट की जेब में डाल ली। रात जब सोने लगे तो उन्हें वोह कैसिट याद आई, सोचा कि सुन लेता हूं, सुब्ह अगर उस इस्लामी भाई ने पूछ लिया तो शरमिन्दगी होगी। जब उन्हों ने वोह कैसिट चला कर सुनी तो सक्ते में आ गए, कैसिट ख़त्म होने के बा'द दोबारा रोते रोते सुनी। अपने गुनाहों से तौबा की और सुब्ह **फ़ज्र** पढ़ने मस्जिद पहुंच गए। नमाज़ियों ने खुश गवार हैरत से उन की त़रफ़ देखा कि येह शख़्स **नमाज़** पढ़ने आ गया ? वोह भी फ़ज्र की ! फिर उन्हों ने अपना "म्यूज़िक सेन्टर" भी बन्द कर दिया और कुछ ही अ़र्से में दाढ़ी शरीफ़ से उन का चेहरा सज गया। फिर 2003 ई. में उन्हें मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में मदनी क़ाफ़िला कोर्स करने की भी सआ़दत मिली।

اَلْحَمْدُلِلّٰه बारह माह के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र का मौक़अ़ मिला और दो काबीनात में मदनी क़ाफ़िला ज़िम्मादार की हैसिय्यत से दा'वते इस्लामी का काम करने की सआ़दत भी मुयस्सर हुई।

गर आए शराबी मिटे हर ख़राबी   चढ़ाएगा ऐसा नशा दीनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 647)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

तवज्जोह हटाने वाले मुआ़मलात से पहले फ़ारिग़ हो जाइये

नमाज़ के आग़ाज़ से क़ब्ल उन तमाम चीज़ों से खुद को फ़ारिग़

कर लीजिये, जो **नमाज़** में तवज्जोह बटने और यादे इलाही से ग़ाफ़िल करने का बाइस बन सकती हों नीज़ जगह पुर सुकून और शोरो ग़ुल से दूर हो, सामने के पर्दे या जाए नमाज़ पर ऐसा नक़्शो निगार, सिल्वटें और उभार वग़ैरा न हो, जिस से तवज्जोह बटे और ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ में ख़लल पड़े। सख़्त सरदी और सख़्त गरमी से बचाव के अस्बाब भी इख़्तियार कीजिये। अगर खाने या पेशाब वग़ैरा की ह़ाजत हो तो उस से फ़ारिग़ हो जाइये।

समझदारी की बात (क़ौल व वाक़िआ)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते थे : "आदमी की समझदारी से है कि पहले ही अपना ज़रूरी काम निमटा ले ताकि **नमाज़** शुरूअ़ करते वक़्त उस का दिल फ़ारिग़ हो।" (قوت القلوب، 169/2) ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ अपने अहले ख़ाना से फ़रमाते : "(मुझ से मुतअ़ल्लिक़) अपनी तमाम ह़ाजतें मेरे **नमाज़** शुरूअ़ करने से पहले पहले मुझे बयान कर दो।" (حلیۃ الاولیاء، 112/2، رقم:1611)

दिल का खाने में फंसा रहना ख़ुशूअ़ में रुकावट है

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ इर्शाद फ़रमाते हैं : जिस बात से दिल बटे और (वोह बात) दफ़्अ़ (या'नी दूर) कर सकता हो उसे बे दफ़्अ़ किये हर **नमाज़** मक्रूह है मसलन पाख़ाने या पेशाब या रियाह़ का ग़लबा हो, मगर जब वक़्त जाता हो तो पढ़ ले फिर फेरे। (या'नी वाजिबुल इआ़दा की निय्यत से दोबारा पढ़े क्यूं कि नमाज़ मक्रूहे तह़रीमी हुई थी) यूंही खाना सामने आ गया और उस की ख़्वाहिश हो। ग़रज़ कोई ऐसा अम्र दरपेश हो जिस से दिल बटे, **ख़ुशूअ़** में फ़र्क़ आए उन वक़्तों में भी **नमाज़** पढ़ना मक्रूह है। (बहारे शरीअ़त, 1/457)

नमाज़ को "खाना" नहीं, "खाने" को नमाज़ बना दूं !

शारेहे बुख़ारी मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर खाना सामने रख दिया गया हो या वोह खा रहा हो कि जमाअ़त शुरूअ़ हो गई तो खाना छोड़ कर जमाअ़त के लिये जाना वाजिब नहीं और इसी के हुक्म में वोह सूरत भी है कि भूक शिद्दत की लगी हो और खाना तय्यार हो। सय्यिदुना **इमामे आ'ज़म** (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) ने फ़रमाया : "**नमाज़** को खाना बना दूं कि **नमाज़** के वक़्त दिल खाने में लगा रहे इस से बेहतर है कि खाने को **नमाज़** बना दूं कि खाते वक़्त दिल **नमाज़** में लगा रहे।" येह उस वक़्त है जब **नमाज़** के वक़्त में गुन्जाइश हो और अगर इस का अन्देशा हो कि खाते खाते **नमाज़** का वक़्त निकल जाएगा या वक़्ते मक्रूह आ जाएगा तो बहर ह़ाल नमाज़ पहले पढ़ ले। (नुज़्हतुल क़ारी, 2/338, 339)

जमाअ़त के लिये दौड़ना अच्छा नहीं

तक्बीरे ऊला या जमाअ़त के लिये दौड़ना मन्अ़ है, इस त़रह़ अगर सांस फूल गया तो "ख़ुशूअ़" कहां से आएगा ? **दा'वते इस्लामी** के मक्तबतुल मदीना की 168 सफ़ह़ात की किताब, "**जल्द बाज़ी के नुक़्सानात**" सफ़ह़ा 31 ता 32 पर है : यक़ीनन तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ना बहुत बड़ी सआ़दत है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ عَنْه से मरवी है : फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم : जिस शख़्स ने रिज़ाए इलाही के लिये चालीस दिन तक **तक्बीरे ऊला** के साथ बा जमाअ़त नमाज़ अदा की, उस के लिये दो क़िस्म की नजातें लिखी गईं, एक नजात जहन्नम से और दूसरी मुनाफ़क़त से। (ترمذی، 1/274، حدیث:241) बा'ज़ इस्लामी भाई तक्बीरे ऊला पाने की जल्दी में दौड़ लगा देते हैं जिस की वज्ह से मस्जिद की ज़मीन पर **धमक** (या'नी आवाज़) पैदा होती है जो कि आदाबे मस्जिद के ख़िलाफ़ है।

दौड़ते हुए न आओ

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने **हुज़ूरे** पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुए सुना कि "जब **नमाज़** की तक्बीर कही जाए तो दौड़ते न आओ, बल्कि चलते हुए इत़्मीनान के साथ आओ, जो पा लो वोह पढ़ लो, जो रह जाए पूरी कर लो।" (مسلم، ص239، حدیث:1360)

नमाज़ के लिये न दौड़ने के फ़ाएदे

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी जमाअ़त के लिये घबरा कर दौड़ते न आओ कि इस में गिर जाने, चोट खाने का अन्देशा है। इस से **चन्द मस्अले** मा'लूम हुए : **एक** येह कि जमाअ़त में शामिल होने के लिये सुकून से आना मुस्तह़ब है, दौड़ना मुस्तह़ब के ख़िलाफ़ है, ह़राम नहीं। **दूसरे** येह कि (नमाज़ का) आख़िरी जुज़्व (या'नी ह़िस्सा) मिल जाने से जमाअ़त मिल जाती है लिहाज़ा जो नमाज़े जुमुआ़ की अत्तह़िय्यात में मिल जाए वोह जुमुआ़ पढ़े (या'नी उस को जुमुआ़ की जमाअ़त मिल गई)। **तीसरे** येह कि जिस रक्अ़त में मुक़्तदी मिले वोह ता'दाद के लिह़ाज़ से रक्अ़ते अव्वल है और क़िराअत के लिह़ाज़ से रक्अ़ते आख़िरी। (मुफ़्ती साह़िब मज़ीद लिखते हैं :) जब से वोह **नमाज़** के इरादे से घर से चला उसे **नमाज़** का सवाब मिल रहा है फिर तेज़ी क्यूं करता है ! क्यूं गिरता और चोट खाता है ! इत़्मीनान से आए जो पाए उस को अदा करे। ख़याल रहे कि अगर तक्बीरे ऊला या रुकूअ़ पाने के लिये क़दरे (या'नी थोड़ी) तेज़ी से आए मगर न इतनी कि चोट लगने गिरने का अन्देशा हो, तो मुज़ायक़ा नहीं। (मिरआतुल मनाजीह़, 1/425, 426 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़हा नम्बर
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	रोता हुवा जहन्नम में दाख़िल होगा	13
आक़ा की चार दुआएं	1	वोह फिर कभी हंसता न देखा गया (वाक़िआ)	13
इल्मे नाफ़ेअ़ से दिल में खुशूअ़ पैदा होता है	2	जन्नत में कोई रोए तो तअ़ज्जुब की बात है	14
"इल्मे नाफ़ेअ़" किसे कहते हैं ?	3	मौत का यक़ीन रखने वाला कैसे हंसे ?	14
शैतान क़रीब नहीं आता	3	40 साल तक न हंसे	14
दिलों को नर्म करने वाले काम	3	लिबास नेकों वाला और......	14
दिल की सख़्ती कैसे दूर हो ? (वाकिआ)	4	नमाज़ में हंसने के अह़काम	15
दिल की पैदाइश का मक़्सद	5	म्यूज़िक सेन्टर बन्द कर दिया	16
गुनाहों से दिल काला हो जाता है	6	समझदारी की बात (क़ौल व वाक़िआ)	18
ज़ालिम से मिलना दिल काला करता है	7	दिल का खाने में फंसा रहना खुशूअ़ में रुकावट	18
गुनाह कुफ़्र के क़ासिद हैं	7	नमाज़ को "खाना" नहीं, "खाने" को नमाज़ बना दूं !	19
कोहे लुबनान के औलिया की नसीह़त	10	जमाअ़त के लिये दौड़ना अच्छा नहीं	19
दिल की सख़्ती का एक सबब ज़ियादा हंसना	11	दौड़ते हुए न आओ	20
हंसना ग़फ़्लत की अ़लामत है	11	नमाज़ के लिये न दौड़ने के फ़ाएदे	20
क्या सह़ाबा हंसते थे ?	11		
दिल की मौत का सबब	12		
अल्लाह से डरने वाले कौन हैं ?	13		

अगले हफ़्ते का रिसाला